समवेत

संपादक

अनुक्रम

1. फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोर्ताज़ों में कृषक जीवन — 7
   प्रो. रसाल सिंह एवं प्रभाकर कुमार
2. हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में स्त्री शिक्षा का स्वरूप ('देवरानी जेठानी की कहानी' व 'वामा शिक्षक' के संदर्भ में) — 18
   डॉ. मीता सोलंकी
3. अज्ञेय की काव्यालोचना (संदर्भ : भक्तिकाव्य) — 28
   डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर
4. हिंदी उपन्यासों में निहित स्त्री विमर्श : एक दृष्टि — 36
   डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
5. विराट अस्तित्व की महायात्रा का काव्य : 'एक समर्पित एकांत' — 43
   ध्रुव कुमार
6. मानवीय संवेदनाओं के कवि : नंद चतुर्वेदी — 49
   निर्मला शर्मा एवं डॉ. सरला शर्मा
7. 'हरी बिंदी' कहानी में नारी संवेदना — 56
   डॉ. प्रमिदा. के
8. जनवादी क्रांति के पक्षधर कवि : नागार्जुन — 59
   डॉ. प्रीति. के
9. सामाजिक संवेदना का पुंज : नंदकिशोर आचार्य का काव्य संसार — 66
   डॉ. मुकेश कुमार शर्मा
10. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में सामाजिक सरोकार — 83
    डॉ. कुलदीप सिंह मीना
11. रामधारी सिंह 'दिनकर' की सांस्कृतिक दृष्टि (गद्य लेखन के विशेष संदर्भ में) — 91
    तरुण पालीवाल

'हरी बिंदी' कहानी में नारी संवेदना

डॉ. प्रमिदा. के

मृदुला गर्ग की रचनाएँ जीवन के यथार्थ धरातल पर आधारित हैं। लगभग पाँच दशकों से वे लेखन कार्य में लगी हुई हैं। उनकी रचनाएँ मानव जीवन के सरोकारों से जुड़ी हुई हैं। समाज, देश, राजनीति और पर्यावरण आदि विभिन्न विषयों पर उनकी लेखनी चली है। मनुष्य जीवन और मानव की विभिन्न प्रकार की मनोस्थितियों पर भी उनकी कहानियों में गंभीर विवेचन मिलता है।

'हरी बिंदी' उनकी बहुचर्चित कहानी है। यह नारी के मन को चित्रित करने वाली कहानी है। अपने पारिवारिक बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन जीने की कामना इसका मुख्य स्वर है। मृदुला गर्ग की कहानियों की भूमिका में दिनेश द्विवेदी ने लिखा है- "'हरी बिंदी' स्त्री स्व-चेतना की वह कहानी है, जहाँ औरत अपने आप का जश्न स्वयं के साथ मना रही है, यानी सेलिब्रेटिंग विद हरसेल्फ।"[1] 'हरी बिंदी' स्त्री विमर्श की कहानी है, एक मुक्त मन की चेतन स्त्री की कहानी है। परंपरा से आने वाली पुरुष मानसिकता एवं नैतिक अनुशासन से मुक्त होने के लिए बेचैन नारी मन प्रस्तुत कहानी का विषय है। 'हरी बिंदी' की मुख्य नारी पात्र समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखाओं से बाहर आना चाहती है। जैसे कहानी की शुरुआत में वह कहती है - "उठना नहीं है क्या ? पर जब कुछ देर चुप्पी बनी रही तो खोलकर देखा, बिस्तर पर वह अकेली है। अरे हाँ, रात ही तो राजन दिल्ली गया है। याद ही नहीं रहा, तो अब उठने की कोई जल्दी नहीं है।"[2] पति राजन बाहर गया है तो सुबह

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, को-ऑपरेटिव आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज माडायी, कण्णूर, केरल-670358